International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.340, Volume 04, No. 01(III), January - March, 2022, pp.174-177

इक्कीसवीं सदी में भारत–अमेरिका के मध्य रक्षा सम्बन्धों का विकास

रविन्द्र कुमार*
डॉ. भारती चौहान**

सार

उन्नीसवीं सदी के अंत तक भारत और अमेरिका के मध्य सम्बन्ध परमाणु अप्रसार संधि पर ही केन्द्रित थे परंतु इक्कीसवीं सदी के आरंभ से ही भारत और अमेरिका के मध्य रक्षा क्षेत्र में सम्बन्धों का तेजी से विकास होने लगा। पहले अमेरिकी राष्ट्रपति क्लिंटन और उसके पश्चात् ट्रम्प के भारत की यात्रा से रक्षा सम्बन्धों को नई दिशा मिली। आज भारत अमेरिका से रक्षा उपकरण आयात करने वाला प्रमुख देश है। पिछले दो दशकों में भारत और अमेरिका के मध्य कई रक्षा समझौते हुए जिनका विवेचन इस आलेख में किया गया है।

शब्दकोश: *परमाणु अप्रसार संधि, रक्षा उपकरण आयात, रक्षा क्षेत्र, सामरिक सहयोगी।*

प्रस्तावना

जनसंख्या की दृष्टि से भारत चीन के पश्चात् दूसरा बड़ा देश है जिसके कारण अमेरिका भारत को एक बड़े बाजार के रूप में भी देखता है। इसके अतिरिक्त अपनी आर्थिक जरूरतों एवं चीन की आर्थिक एवं सैन्य ताकत को सन्तुलित करने के लिए भी भारत का महत्व अमेरिका के और अधिक बढ़ गया। आज अमेरिका भारत को दक्षिण एशिया में अपना एक महत्वपूर्ण सामरिक सहयोगी के रूप में देखता है।

भारत और अमेरिका के बीच रक्षा सहयोग में पिछले कुछ वर्षों में तेजी से वृद्धि हुई है और दोनों साझेदारों के बीच सामान्य हितों और बढ़ते विश्वास की गवाही है। भारत और अमेरिका के बीच रक्षा और सुरक्षा सहयोग के पीछे दो मुख्य कारण राजनीतिक समझ और अभिसरण सुरक्षा धारणा की कमी है। रक्षा और सुरक्षा सहयोग में संयुक्त सैन्य–से–सैन्य अभ्यास शामिल हैं, जिसमें सशस्त्र बलों की सभी शाखाओं, सशस्त्र बलों के प्रशिक्षण, हथियारों और उपकरणों की आपूर्ति, उच्च–स्तरीय दौरे, विषय वस्तु विशेषज्ञ एक्सचेंज आदि शामिल हैं। 21 वीं सदी में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाली क्षेत्रीय और प्रमुख शक्ति के रूप में भारत की बदलती भूमिका के जवाब में रक्षा और सुरक्षा सहयोग विकसित हो रहा है।[1]

इक्कीसवीं सदी में भारत–अमेरिका रक्षा समझौते

इक्कीसवीं सदी के आरंभ से ही भारत और अमेरिका के मध्य रक्षा सम्बन्धों सुदृढ़ होना आरंभ हो गये थे। इससे पूर्व दोनों देशों के मध्य सम्बन्ध मुख्य रूप से परमाणु अप्रसार संधि पर ही केन्द्रित थे। दक्षिण एशिया में शांति स्थापित करने के उद्देश्य से अमेरिकी राष्ट्रपति ने वर्ष 2000 में भारत का दौरा किया और तत्कालीन प्रधानमंत्री अटलबिहारी वाजपेयी और क्लिंटन के मध्य कई समझौतों पर हस्ताक्षर किये गये। बुश प्रशासन द्वारा दिल्ली और वाशिंगटन के बीच रक्षा क्षेत्र में मजबूत करने के प्रयास आरंभ किये गये थे उसे क्लिंटन की इस यात्रा ने गति प्रदान की।[2]

---

* शोधार्थी, रक्षा, स्त्रॉतेजिक एवं भू–राजनीतिक अध्ययन विभाग, हे.न.ब.ग. (केन्द्रीय) विश्वविद्यालय, श्रीनगर (गढ़वाल), उत्तराखण्ड।
** प्रोफेसर, रक्षा, स्त्रॉतेजिक एवं भू–राजनीतिक अध्ययन विभाग, हे.न.ब.ग. (केन्द्रीय) विश्वविद्यालय, श्रीनगर (गढ़वाल), उत्तराखण्ड।

1 जे.एन. दीक्षित एवं रहीस सिंह, भारत की विदेश नीति, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2020।

2 वी.के. मल्होत्रा, ए न्यू एरा इन इण्डो–यू.एस. रिलेशन्स, विजडम हाउस एकेडेमिक बुक्स पब्लिशर्स, पंचकुला, 2002, पृ. 74।

रक्षा सौदों की शुरूआत वर्ष 2002 में अमेरिका द्वारा भारत को लम्बी दूरी तक रॉकेट और मोर्टर का पता लगाने वाले आठ रडार सिस्टम देने पर सहमति से हुई। इसके पश्चात् वर्ष 2003 में अमेरिका 'इजरायिली फॉल्कन अर्ली वार्निंग सिस्टम' भारत को देने पर पर सहमत हो गया। इसी कड़ी में वर्ष 2004 में भारत और अमेरिका ने एक रणनीतिक साझेदारी में प्रवेश किया। 2004 में अमेरिका और भारत के मध्य असैन्य परमाणु गतिविधियां, मिसाइल रक्षा, नागरिक अंतरिक्ष कार्यक्रम और उच्च प्रौद्योगिकी व्यापार आदि पर सहमति बनने से दोनों देशों के मध्य संबंध और अधिक मजबूत हुए।[1]

जून, 2005 को संयुक्त राज्य अमेरिका और भारत के बीच रक्षा और सैन्य संबंधों को मजबूत करने के लिए, दोनों देशों के रक्षा मंत्रियों ने वाशिंगटन डीसी में 10 साल के रक्षा समझौते पर हस्ताक्षर किए। इस समझौते में संयुक्त हथियारों के उत्पादन और मिसाइल डिफेंस पर सहयोग के साथ सैन्य संबंधों को गति देने का मार्ग प्रशस्त किया। इस समझौते का उद्देश्य दोनों देशों के मध्य होने वाली संयुक्त गतिविधियों पर नजर रखना है जिसमें दोनों देशों के मध्य होने वाले बहुर्राष्ट्रीय आपरेशन में आपसी सहयोग भी शामिल है। साथ ही दोनों देशों की संहारक हथियारों को नष्ट करने की क्षमता का आंकलन करना भी शामिल है। भारत के लिए यह समझौता अत्यन्त महत्वपूर्ण साबित हुआ जिसकी सहायता से भारत और अमेरिका के मध्य संयुक्त हथियारों का उत्पादन, मिसाइल डिफेंस तथा नागरिक एवं रक्षा तकनीकों का आदान–प्रदान आसानी से कर सकता है।[2]

वर्ष 2009 में अमेरिका के विदेश मंत्री हिलेरी क्लिंटन ने भारत यात्रा के दौरान कई रक्षा समझौते पर अपनी सहमति जताई जिससे भारत और अमेरिका के सामरिक संबंध और अधिक मजबूत हुए। हिलेरी क्लिंटन द्वारा भारत यात्रा के दौरान अमेरिकी रक्षा तकनीक और रक्षा उपकरणों के आयात पर चर्चा हुई। इस यात्रा के दौरान दोनों देशों के बीच एण्ड यूजर मॉनीटरिंग समझौते का प्रस्ताव रखा गया जिसके अन्तर्गत अमेरिका भारत को संवेदनशील सैन्य तकनीक बेच सकेगा। क्लिंटन की इस यात्रा से भारत और अमेरिका के बीच सामरिक और रणनीतिक सहयोग को एक नई दिशा मिली।[3]

वर्ष 2010 में पहली बार भारत और अमेरिका के मध्य पहली सामरिक वार्ता वाशिंगटन में हुई तथा दूसरी वार्षिक सामारिक वार्ता 2010 में दिल्ली में आयोजित की गई जिसमें दोनों देशों के विदेश मंत्रियों एवं उच्च प्रशासनिक अधिकारियों ने भाग लिया। इस वार्ता के अंत में दोनों देशों ने एक संयुक्त व्यक्तव्य जारी किया गया जिसमें परमाणु समझौते के अतिरिक्त ऊर्जा एवं जलवायु परिवर्तन, महिला सशक्तिकरण, शिक्षा, कृषि, व्यापार एवं खाद्य सुरक्षा जैसे मुद्दों को सम्मिलित किया गया।

वर्ष 2014 में आम चुनावों के बाद नरेन्द्र मोदी के रक्षा क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति हुई है। भारत पर अवरोधों और प्रतिबंधों की अवधि से ही संयुक्त राज्य अमेरिका सक्रिय रूप से भारतीय रक्षा साझेदारी और निर्यात प्राप्त करने का प्रयास कर रहा है। 8 अगस्त 2014 को, भारत के प्रधान मंत्री और अमेरिकी रक्षा सचिव चक हगेल ने नई दिल्ली में मुलाकात की, जिसमें भारत–अमेरिका के 10 साल के रक्षा समझौते और संयुक्त रूप से सैन्य हार्डवेयर के विकास और उत्पादन के नवीनिकरण पर चर्चा की गई। यह निर्णय भारत–अमेरिका रणनीतिक संबंध के नवीकरण का संदेश देते हैं। वाशिंगटन में राष्ट्रपति बराक ओबामा के साथ पीएम मोदी की बातचीत का एक हिस्सा है। इस यात्रा के दौरान कम से कम 22 अमेरिकी अपाचे और 15 चिनूक हेलीकॉप्टर खरीदने के लिए 1.4 बिलियन डॉलर के सौदे पर विचार किया गया।[4]

रक्षा उपकरणों और प्रौद्योगिकी को भारत तक पहुंचाने में सक्षम करने हेतु संयुक्त राज्य अमेरिका ने 2016 में भारत को एक प्रमुख रक्षा भागीदार के रूप में मान्यता दी। इस मान्यता से भारत को संयुक्त राज्य संधि सहयोगियों के साथ समान व्यवहार करने की अनुमति मिली, जबकि वह स्वयं इनमें से एक नहीं था। इसने

---

1 विवेक चढ्ढा, इन्डो–यूएस रिलेशन्स डायवर्जेन्ट टु कन्वर्जेन्स, मैकमिलन इंडिया लिमिटेड, नई दिल्ली, 2008।

2 टाईम्स ऑफ इण्डिया, 29 जून 2005।

3 टाइम्स ऑफ इण्डिया, 17 जुलाई, 2009।

4 प्रधानमंत्री की अमेरिका यात्रा के दौरान भारत–अमेरिका संयुक्त व्यक्तव्य (अमेरिका और भारत : 21वीं सदी में स्थायी वैश्विक सहभागी, availabe at https://www.mea.gov.in/outoging-visit-detail-hi.htm?26879/IndiaUS+ Joint+Statement+during+the+visit+of+Prime+Minister+to+USA+The+United+States+and+India+Enduring+Global+Partners+in+the+21st+Century

भारत की रक्षा सूची हेतु प्रौद्योगिकी के हस्तांतरण के साथ–साथ हथियारों की प्रणालियों और अन्य प्लेटफार्मों की सरल खरीद का मार्ग प्रशस्त किया। दोनों देशों ने गहरे सैन्य सहयोग के लिए भी एक समझौते पर हस्ताक्षर किए, जिसमें रक्षा संबंध को क्षेत्र में 'स्थिरता के सहारे' के रूप में स्वीकार किया गया।[1]

2017 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प के बीच पहली बैठक में सुरक्षा क्षेत्र में सहयोग को और मजबूत करने पर भी सहमति व्यक्त की। संयुक्त राज्य अमेरिका ने भारत की क्षमताओं को बढ़ाने तथा साझा सुरक्षा हितों को बढ़ावा देने के लिए सी मानवरहित हवाई प्रणाली सी गार्जियन की बिक्री की पेशकश की। सी गार्डियन एक सशस्त्र ड्रोन है जिसका इस्तेमाल भारतीय तटों से समुद्री निगरानी हेतु किया जाएगा। ट्रम्प प्रशासन ने भारत को सशस्त्र ड्रोन की बिक्री को मंजूरी दे दी है और एकीकृत हवाई तथा मिसाइल रक्षा प्रणालियों की पेशकश की है, जिसका उद्देश्य देश को अपनी सैन्य क्षमताओं को बढ़ावा देना और रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण भारत–प्रशांत क्षेत्र में साझा सुरक्षा हितों की रक्षा करना है।

वर्ष 2018 में भारत में आयोजित पहले 2+2 संवाद से घनिष्ठ सहयोग बनाने की प्रेरणा को आगे बढ़ाया गया। इस संवाद में दोनों देशों के बीच बढ़ते रक्षा संबंध, बढ़ता सैन्य से सैन्य संपर्क, संयुक्त अभ्यास और द्विपक्षीय विकास संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा प्रस्तावित प्रौद्योगिकी तथा उपकरणों के स्तरों में रक्षा व्यापार और गुणात्मक सुधार को मान्यता मिली। भारत ने लाइसेंस मुक्त निर्यात रणनीतियों के तहत लाइसेंस मुक्त निर्यात और फिर से निर्यात तथा हस्तांतरण हेतु देशों की सूची में शामिल किए जाने का स्वागत किया। एक वर्ष के दौरान, दोनों लोकतंत्रों के बीच संबंध अमेरिकी रक्षा हार्डवेयर खरीदने वाले भारत के साथ रक्षा क्षेत्र में सहयोग बढ़े हैं, दोनों देशों ने संचार संगतता और सुरक्षा समझौता को लागू किया है, आतंकवाद जैसे वैश्विक चिंता के मामलों पर निकट सहयोग का निर्माण और स्वतंत्र तथा खुले भारत–प्रशांत के विकास की दिशा में एक साथ काम कर रहे हैं।[2]

भारत ने रूस से वर्ष 2018 में एस–400 मिसाइल सिस्टम की खरीदने से अमेरिका द्वारा भारत पर काटसा (काउंटरिंग अमेरिकाज एडवसरीज थ्रो सैंक्शन एक्ट) के तहत् अमेरिका दुसरे दर्जे के प्रतिबंध लगा सकता है, बाइडेन प्रशासन के द्वारा सेक्शन 23(डी) के अन्तर्गत, भारत को पाबंदियों में कुछ रियायत मिल सकती है। अमेरिका ने भारत पर पूर्ण रूप से प्रतिबंध के कारण दोनों राश्ट्रों के वैश्विक सम्बंधों पर दीर्घकालीन प्रभाव पड़ेगा।[3]

दोनों देशों ने बातचीत के दौरान पहला त्रि–सेवा अभ्यास आयोजित करने पर सहमति व्यक्त की। यह 2019 में आयोजित किया गया था। रूस के बाद संयुक्त राज्य अमेरिका एकमात्र दूसरा देश है, जिसने भारत में त्रि–सेवा अभ्यास आयोजित किया है। 2019 वार्ता से पहले दोनों देशों ने सुरक्षा साझेदारी को आगे बढ़ाने हेतु कदम उठाए हैं। संयुक्त राज्य प्रशासन ने 'रणनीतिक क्षेत्रीय साझेदार' के सुरक्षा हितों को मजबूत करने के घोषित लक्ष्य के साथ भारत को नौसेना बंदूकें, हेलीकॉप्टर और अन्य उपकरणों की बिक्री को मंजूरी दे दी है। भारत सरकार ने अतिरिक्त समुद्री निगरानी हवाई जहाजों के लिए भारतीय नौसेना के अनुरोध को मंजूरी दे दी है। बिक्री की मंजूरी दो राष्ट्रों के हित में अभिसरण का स्पष्ट संकेत है।[4]

भारत– अमेरिका के मध्य (GSOMIA - General Security of military Information Agreement) ''सैन्य सूचना समझौता की सामान्य सुरक्षा'' पर वर्ष 2002 में दोनों राश्ट्रों ने इस समझौते पर हस्ताक्षार किये। इस समझौते के तहत् भारत –अमेरिका अपने रक्षा उद्योग के बीच गोपनीय सैन्य सुचनाओं के आदान–प्रदान और संरक्षण के लिए, एक ढॉचा प्रदान करता है।

---

1 उपरोक्त

2 इण्डो–यू.एस. 2+2 मिनिस्ट्रियल डायलॉग, प्रेस विज्ञप्ति 6 सितम्बर, 2008, विदेश मंत्रालय, भारत सरकार।

3 https://www.bhaskar.com/international/news/russia-india-s-400-air-defence-missile-deal-big-tension-to- us-america-imposes-sanctions-on-turkey-128032073.html 05/05/2022

4 https://economictimes.indiatimes.com/news/defence/india-us-begin-first-tri-services- sexercise/articleshow/72045207.cms?from=mdr

(LEMOA – Logistic Exchange Memorandum of Agreement) ''लॉजिस्टिक एक्सचेंज मेमोरेंडम ऑफ एग्रीमेंट'' पर भारत–अमेरिका ने वर्श 2016 में हस्ताक्षर किय गये। इस समझौते के अन्तर्गत दोनों राश्ट्र अपने रक्षा सेनाओं को एक–दुसरे की सुविधाओं का उपयोग करने के साथ ही रसद और सेवचाओं की पॅहुच को आसान बनाना है।

(COMCASA – Communication Compatibility and Security Agreement) ''संचार संगतता और सुरक्षा समझौते पर वर्श 2018 में हस्ताक्षर हुए, अमेरिका द्वारा इस समझौतें के तहत् भारम को उन्नत–संचार उपकरणों का आदान–प्रदान करने की अनुमति देता है। दोनों राष्ट्र के सशस्त्र बलों के बीच डाटा और उचित व सुरक्षित समंवय स्थापित करने की सुविधा प्रदान करते है।

(BECA – Basic Exchange and Cooperation Agreement for Geo-Spatial Cooperation) ''भू–स्थानिक सहयोग के लिये बुनियादी विनिमय तथा सहयोग समझौता'' वर्ष 2020 में हुआ। अमेरिका द्वारा भारत को स्वचालित हार्डवेयर सिस्टम और हथियार जैसे कि क्रूज, बैलिस्टिक मिसाईल से सटीक हमले करने के लिए, भू–स्थानिक मानचित्र उपलब्ध करवाना है।[1]

यह चार अहम् रक्षा समझौते से दोनों राष्ट्रों के बीच गहरे सैन्य सहयोग की नींव मजबूत हुई, जिसके परिणामस्वरूप चीन, रूस और पाकिस्तान ने अपने आपसी सहयोग से तालिबान के नेताओं को संयुक्त राष्ट्र की प्रतिबंधि सूची से नाम हटाने, रूस को एकनॉमिक कॉरिडोर (सी.पी.ई.सी.) का सदस्य बनाने, रूस द्वारा युरेश्यिन इकनॉमिक यूनियन (ई.ई.यू.) का सी.पी.ई.सी. में विलय पर सहमति देना आदि, कुछ समय सें जिस प्रकार भारत–अमेरिका के बढ़ने रिश्तों से रूस व पाकिस्तान के साथ सामरिक सहयोग वर्ष 1963 सें आर्थिक गलियारें (सी.पी.ई.सी.) में सहयोग. चीन द्वारा वीटो पॉवर सें भारत के न्यूक्लियर सप्लायर ग्रुप (एन.एस.जी.) सें शामिल होने सें रोकने के लिए, किया भारत द्वारा इनकी बढ़ती एकजुटता पर ध्यान रखकर होगा, ताकि आपने हितों पर आंच ना आयें। अमेरिका के रूस,चीन व पाक के साथ बदलते रिश्तों का भारत पर क्या प्रभाव पडेगा, इस पर गहराई से नजर रख, उसी प्रकार अहम् कदम उठाने पड़ेंगे।[2]

जो बाइडेन 20 जनवरी 2021 को अमेरिका के 46 वें राष्ट्रपति बनें, इनके प्रशासन काल में अमेरिकी के पूर्व राष्ट्रपतियों डोनाल्ड ट्रम्प व बराक ओबामा की भारत के प्रति सामरिक, आर्थिक व व्यापारिक नीतियों का पूर्व की तरह व आगे भी यथावत रखने, तथा वैश्विक मंचों पर एक–दूसरे का सहयोग करने, राष्ट्रपति बाइडेन की भारत के साथ सम्बंधों में जलवायु परिवर्तन महत्वपूर्ण मुद्दे है, अतः चीन व पाकिस्तान के प्रति बाइडेन का रूख नरम है, किन्तु ट्रेडवार के मोर्चे पर उनके नजरिए पर दुनिया भर की नजर रहेगीं। अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन का सोचना है कि भारत–अमेरिका के संबंध दुनिया के दो सबसे करीबी राष्ट्रों में से एक हैं। इससे यहां स्पष्ट है कि राष्ट्रों के संबंधों में मधुरता कायम रहेंगी।

निष्कर्ष

21वीं सदी में भारत–अमेरिका गठजोड़ नए, मुकाम स्थापित कर रहे हैं। अतः अमेरिका का यह मानना है कि भारत को मजबूत किये बिना दक्षिण एशिया में स्थिरता स्थापित करना संभव नहीं है। इसी दृष्टिकोण को अपनाते हुए इक्कीसवीं सदी के आरंभ से ही भारत और अमेरिका के मध्य रक्षा सम्बन्धों का तेजी से विकास हुआ। अमेरिका द्वारा भारत के साथ, रक्षा, सुरक्षा हो, ऊर्जा सामरिक गठजोड़ हो, प्रौद्योगिकी सहयोग, वैश्विक सम्पर्क हो, दोनों राष्ट्रों के बीच बढ़ते रक्षा और सुरक्षा हमारे सामरिक गठजोड़ का एक बहुत अहम् हिस्सा हैं। आज अमेरिका भारत को एक प्रमुख रणनीतिक साझेदार मानता है और भारत को कई आधुनिक रक्षा उपकरण देने पर सहमत हुआ है।

❖◆❖

1 https://www.civilhindipedia.com/blogs/blog_post/indo-us-upcoming-2-2-ministerial-level-talks
2 https://www.orfonline.org/hindi/reserch